भौंचक

कमरे में थी मेज़, मेज़ पर
बाबा जमें हुए थे;
मोटी रक्खी थी किताब वे
जिसमें रमे हुए थे।

दबे– पाँव आ घुसा न जाने
बबलू कब का अन्दर;
झूल रहा था खिड़की से यूँ
जैसे कोई बन्दर ।

दिखा सड़क पर जाता उसको
कुत्ते का एक पिल्ला;
मगर बुलाने लगा उसी को
बबलू चिल्ला–चिल्ला ।

"काम नहीं करने देते तुम
बबलू बिलकुल हमको
इतनी जोर से क्यों चिल्लाते
मारेंगे हम तुमको।"

बबलू बोला– "तो क्या बाबा
धीरे से चिल्लाएँ?"
भौंचक्के रहे बाबा ताकते
क्या जवाब लौटाएँ?

रमेशचन्द्र शाह

अभ्यास

1. टोली बनाकर अभिनय करो।

क. दबे पाँव चलने का
ख. किताब में रमें रहने का
ग. बन्दर की तरह झूलने का
घ. जोर से चिल्लाने का

2. क्या तुम धीरे से चिल्ला सकते हो? कोशिश करो।

3. अभी तुमने दबे पाँव चलने का अभिनय किया था। अब यह अभिनय भी करो–

क. ठिठक–ठिठक कर चलना　　ख. सरपट भागना

ग. सिर पर पैर रखकर भागना　　घ. नौ– दो– ग्यारह होना

4. बताओ –

क. बाबा मेज पर क्यों जमे हुए थे?

ख बबलू कमरे में आने से पहले कहाँ था?

ग. यदि बबलू चिल्लाने की जगह पिल्ले को धीरे से बुलाता तो क्या होता?

घ. जब बबलू बोला – "तो क्या बाबा धीरे से चिल्लाए? " यदि बाबा की जगह तुम होते तो क्या जवाब देते?

5. इस कविता को पढ़कर कोई चित्र बनाओ। उसमें बबलू को बन्दरकी तरह झूलते हुए जरूर दिखना।

6. एक कहानी लिखो जिसमें ये शब्द कहीं न कहीं जरूर आए।

पिल्ला, दबे पाँव, खिड़की, बन्दर, भौंचक्के, जवाब

7. इन शब्दों से मिलते–जुलते शब्द सोचो और लिखो

हमको	बन्दर	पिल्ला	मेज	बुलाने
___	___	___	___	___
___	___	___	___	___
___	___	___	___	___
___	___	___	___	___
___	___	___	___	___
___	___	___	___	___

8. नीचे एक कविता की कुछ लाइनें लिखीं हैं। बीच–बीच में लाइनें गायब हैं। तुक मिलाकर गायब लाइनें ढूंढो–

हमने पाली बिल्ली

_____

_____

दिल्ली में थी किल्ली

_____

_____

सबने उड़ाई खिल्ली

_____

_____

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

बबलू की जगह अगर बबली होती तो कविता पढ़कर देखो कि कहाँ–कहाँ बदलाव करना पड़ेंगे। जो वाक्य बदले उन्हें यहाँ लिखो–

	कविता में क्या था	**बदलकर क्या हुआ**
जैसे,	दबे–पाँव घुसा न जाने	दबे–पाँव घुसी न जाने
	----------	----------
	----------	----------
	----------	----------
	----------	----------
	----------	----------
	----------	----------
	----------	----------
	----------	----------
	----------	----------
	----------	----------

इस कविता में दो ऐसे शब्द हैं जिनमें एक अक्षर संयुक्त रूप में लगता है।

भौंचक्के में पहले आधा क (क्) फिर पूरा 'क' **चिल्ला** में आधा ल (ल्) फिर पूरा 'ल'

तुम सबके साथ मिलकर दोनों तरह के और शब्द सोचो और यहाँ लिखो। उन से वाक्य भी बनाओ।

----	----------	----	----------
----	----------	----	----------
----	----------	----	----------
----	----------	----	----------
----	----------	----	----------

इस कविता में आए क्रिया शब्द छाँट कर यहाँ लिखो ।

----	----	----	----
----	----	----	----
----	----	----	----
----	----	----	----

– कुछ **सर्वनाम** तो तुमने छाँटे। ये शब्द भी सर्वनाम हैं:

मैं, मुझे, मेरे,	यह, वह, उस, उन	आप, स्वयं, खुद (जैसे, मैं अपने आप ही
हम, हमारे	कोई, किसी	खाना बना लेता हूँ।)
तू, तुम, तेरे, तुम्हारे	कौन, क्या, कहाँ	
आप, आपके	जो	

क्या तुम अब यह बता सकते हो कि सर्वनाम शब्दों का इस्तेमाल कहाँ होता है?

इस कहानी में से सर्वनाम छाँटो और यह पता करो कि कौन से सर्वनाम सबसे ज़्यादा उपयोग में आए हैं।

सर्वनाम	कितनी बार आया	सर्वनाम	कितनी बार आया
_____	___	_____	___
_____	___	_____	___
_____	___	_____	___
_____	___	_____	___

"अब्बू खाँ की बकरी" - कुछ अभ्यास

पन्ना नं. 1

*कहानी के इन वाक्यों में से अब **क्रियाएँ** छाँटते हैं।*

कहानी में से	क्रिया	क्रिया से एक नया वाक्य
भेड़िया ज़मीन पर बैठा था।	बैठा	_____
ठंडी हवा चलने लगी।	चलने	_____
वह भेड़िये से लड़ रही थी।	____	_____
पहाड़ पर एक भेड़िया रहता था।	____	_____
दो आँखें अँधेरे में चमक रहीं थीं।	____	_____
वह उन्हें खा जाता था।	____	_____

कहानी में देखो – क्या हर वाक्य में क्रिया शब्द आता है? इस कहानी में आयीं अलग–अलग क्रियाएँ यहाँ लिखो।

जिन वाक्यों में किया न आती हो उन्हें यहाँ लिखो।

_____	____	____
_____	____	____
_____	____	____
_____	____	____

नजानू कवि बना

(बच्चों के खेलने का मैदान। एक कोने में नजानू उदास बैठा है। उसके मित्र अपने खिलौने लेकर वहीं आते हैं। सब बच्चे मिलकर गीत गाते हैं।)

सारे बच्चे: देखो देखो नजानू का हाल देखो
कैसे पड़ती है उल्टी हर चाल देखो
देखो-देखो .....
कुछ नया दिखाने की मन में अगन
पर घड़ी दो घड़ी में ही टूटे लगन
बड़ा उल्टा हुआ यह सवाल देखो
देखो-देखो नजानू का हाल देखो
कैसे पड़ती है उल्टी हर चाल देखो

मोटू : अरे नजानू। वहाँ क्यों बैठे हो?

छोटू : आओ हम नदी पहाड़ खेलेंगे।

नजानू : नहीं तुम लोग खेलो।

(सारे बच्चे खेलने लगते हैं। नजानू उन्हें मुँह चिढ़ाता है। उसी समय गुलदस्ता वहाँ आता है।)

गुलदस्ता : नजानू, ओ नजानू! वहाँ चुपचाप क्यों बैठे हो? खेलोगे नहीं?

नजानू : नहीं, मेरा मन खेल में नहीं लगता। मैं बड़ा कलाकार बनना चाहता हूँ।

गुलदस्ता : अरे हाँ! तुम तो चित्रकारी सीख रहे थे न?

नजानू : हाँ। लेकिन वो काम मुझे पसन्द नहीं आया।

गुलदस्ता : क्यों, क्यों?

नजानू : एक दिन मैंने डॉक्टर गोलीवाला की दीवार पर भैंस का चित्र बनाया था। उन्होंने मेरी माँ से शिकायत कर दी।

गुलदस्ता : अच्छा! तो यह बात है।

नजानू : गुलदस्ता जी! आप कविताएँ कैसे लिख लेते हैं?

गुलदस्ता : बहुत आसानी से। लेकिन उसके लिए मुझे बहुत मेहनत करनी पड़ी थी।

नजानू : आप मुझे कविता लिखना सिखा देंगे? मैं भी कवि बनना चाहता हूँ।

गुलदस्ता : हूँ... सिखा तो सकता हूँ...मगर तुम्हारी प्रतिभा की परख करनी पड़ेगी। तुम जानते हो, तुक क्या होती है?

नजानू : तुक? नहीं, मैं तो नहीं जानता।

गुलदस्ता : तुक उसको कहते हैं जब दो शब्दों का अन्त एक ही तरह से होता है। जैसे– नानी–रानी, घोड़ा–थोड़ा, समझे।

नजानू : हाँ, समझ गया।

गुलदस्ता : अच्छा छड़ी की तुक बताओ।

नजानू : झाड़ी!

गुलदस्ता : यह कैसी तुक है– छड़ी– झाड़ी? इन शब्दों से तुक नहीं बनती।

नजानू : वाह क्यों नहीं बनती? इनका अन्त तो एक ही तरह से होता है।

गुलदस्ता : मगर कविता रचने के लिए इतना ही काफ़ी नहीं है। यह ज़रूरी है कि शब्द एक ही तरह के हों औरकविता का जोड़ बैठ सके। लो, सुनो, छड़ी–घड़ी,भट्टी–खट्टी, किताब–हिसाब।

नजानू : समझ गया, समझ गया! छड़ी–घड़ी, भट्टी–खट्टी, किताब–हिसाब, शाबाश।

(नजानू अपनी ही पीठ ठोककर खुश होता है)

गुलदस्ता : अच्छा, अब कुरसी शब्द का तुक बताओ।

नजानू : टुरसी!

गुलदस्ता : टुरसी? ऐसा तो कोई शब्द नहीं है।

नजानू : है, है क्यों नहीं?

गुलदस्ता : बिलकुल नहीं है।

नजानू : अच्छा तो छुरसी।

गुलदस्ता : यह छुरसी क्या चीज़ है?

नजानू : छुरी से काटने वाले को छुरसी कहते हैं।

गुलदस्ता : तुम मुझे बुद्धू बना रहे हो। इस तरह का कोई शब्द नहीं होता। सुनो, अगर कविता लिखना सीखना है तो ऐसा शब्द चुनना चाहिए जिसे सब समझते हों। ऐसा नहीं, जिसे खुद ही बना लिया।

नजानू : और अगर ऐसा शब्द न मिले जिसे सब समझते हों, तो?

गुलदस्ता : इसका मतलब यह है कि तुममें कविता रचने की प्रतिभा नहीं।

नजानू : तो तुम खुद ही बताओ, कुरसी की तुक क्या होगी?

गुलदस्ता : अभी लो।

(काफ़ी देर तक सोचता है, सिर खुजाता है और परेशान होता है।)

गुलदस्ता : गुरसी.....मुरसी....जुरसी....पुरसी ....उफ़। यह कैसा शब्द है। इस शब्द को

क्या हो गया है। इसकी कोई तुक ही नहीं।

नजानू : देखा! खुद ने ही ऐसा शब्द लिया जिसकी कोई तुक ही नहीं है। उस पर कहते हो कि मुझ में कविता रचने की प्रतिभा नहीं है।

गुलदस्ता : अच्छा–अच्छा, है प्रतिभा! बस? मेरा तो सिर दर्द करने लगा। इस तरह की कविताएँ लिखो, जिनका कोई अर्थ हो।

नजानू : इसका मतलब.....यह तो बहुत आसान है।

गुलदस्ता : बिलकुल! बहुत आसान है।.. बुद्धू कहीं का। कविता करते–करते कहीं पिट न जाए।

(गुलदस्ता बड़बड़ाता हुआ चला जाता है। नजानू उछलता है। अपनी पुरानी जगह पर पहुँचकर सोचने लगता है। दूसरे बच्चे खेलते खेलते थक जाते हैं।)

सुस्तराम : भई, अपन तो थक गए।

मोटू : हम भी।

जानू : हम भी।

(नजानू अचानक चिल्लाता हुआ उनके पास आता है।)

नजानू : अरे सुनो सुनो! मैंने बहुत अच्छी कविताएँ रची हैं।

मोटू : अच्छा। किसके बारे में हैं तुम्हारी कविताएँ? ज़रा सुनाओ तो।

नजानू : मेरी सारी कविताएँ तुम्हीं लोगों के बारे में हैं। सबसे पहली कविता तो जानू की ही है। लो, सुनो,

जानू गया टहलने नदिया के तट पर
जाते–जाते कूदा मोटर की छत पर।

जानू : झूठ, मैं मोटर की छत पर कब कूदा?

नजानू : अरे, ऐसा तो सिर्फ़ कविता में हुआ, तुक मिलाने के लिए।

जानू : यानी तुक मिलाने के लिए तुम मेरे बारे में ऐसी झूठी बातें कहोगे।

नजानू : और क्या, मुझे सच्ची बात कहने की क्या पड़ी है? जो सच है वो तो है ही।

जानू : अच्छा! ज़रा फिर से तो ऐसा करके देखो तब पता चलेगा।

मोटू : ठीक है, ठीक है! लड़ो मत। अच्छा, और दूसरों के बारे में तुमने क्या लिखा है?

नजानू : लो, जल्दबाज़ के बारे में सुनोः

जल्दबाज़ को भूख लगी
निगल गया ज़िन्दा मुर्गी।

जल्दबाज़ : छी! यह मेरे बारे में इसने क्या लिखा है? मैंने तो कभी अण्डा भी नहीं निगला।

नजानू : हाँ–हाँ। मगर तुम चिल्लाते क्यों हो? यह तो मैंने तुक मिलाने के लिए कहा है।

जल्दबाज़ : मगर मैंने कोई मुर्गी नहीं निगली। न ज़िन्दा न पकी।

नजानू : ओफ़्। तो मैं सच में थोड़े ही कह रहा हूँ। यह तो कविता है।

जल्दबाज़ : बड़ी अच्छी कविता, थू।

नजानू : अच्छा, लो! सुस्तराम की कविता सुनोः

सुस्तराम की जेब देखो,
रखा है मीठा सेब देखो!

सब : दिखाओ–दिखाओ।

सुस्तराम : झूठ, सफ़ेद झूठ! मेरी जेब में कोई सेब नहीं है। लो देख लो।

छोटू : हाँ–हाँ! इसकी जेब में तो कुछ भी नहीं है।

नजानू : तुम लोग कविता के बारे में तो कुछ भी नहीं समझते। ऐसा सिर्फ़ तुक मिलाने के लिए कहा गया है कि जेब में सेब रखा है। कोई असल में थोड़े ही रखा है। मैंने मोटू के बारे में भी कविता लिखी है।

मोटू : अपनी बकवास बन्द करो। यह हमारे बारे में साफ़ झूठ बघार रहा है और हम चुपचाप सुनते रहें।

छोटू : बस करो, हमें नहीं सुननी कविता–फविता। यह कोई कविता है? यह तो हमें चिढ़ाना है।

जल्दबाज़ : वाह! पहले कैसे चुपचाप सुनते रहे?

जानू : जैसे उसने हमारे बारे में कविताएँ पढ़ीं, उसी तरह वह दूसरों के बारे में भी पढ़ेगा।

छोटू–मोटू : हमें नहीं चाहिए। हम नहीं सुनेंगे।

नजानू : अगर तुम लोग कविता सुनना नहीं चाहते तो मैं जाकर पड़ोसियों को सुनाऊँगा।

मोटू : अच्छा तुम्हारी इतनी हिम्मत! रूको बताता हूँ।

(मोटू और छोटू और बाक़ी सब मिलकर नजानू को मारने दौड़ते हैं।)

नजानू : रूको–रूको! तुम लोगों को अच्छा नहीं लगता तो मैं कविता नहीं पढ़ूँगा। .. तुम मुझे मारो मत।

छोटू : सच कह रहे हो?

नजानू : सच, बिल्कुल सच।

मोटू : तो लगाओ उठक–बैठक।

(नजानू उठक–बैठक लगाने लगता है।)

नजानू कवि बना– अभ्यास

1. किसने, किससे कहा–

क. नहीं, मेरा मन खेल में नहीं लगता। मैं बड़ा कलाकार बनना चाहता हूँ।

ख. इसका मतलब यह है कि तुममें कविता रचने की प्रतिभा नहीं।

ग. झूठ, सफेद झूठ! मेरी जेब में कोई सेब नहीं है। लो देख लो।

2. नीचे लिखे मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य बनाओ।

सफेद झूठ, हर चाल उल्टी पड़ना, अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना।

3. इन शब्दों के मतलब (शब्दार्थ) लिखो और उन से वाक्य बनाओ।

अगन, मेहनत, रचना, हिम्मत, प्रतिभा, परख, अचानक।

4. अपनी कॉपी में इन प्रश्नों के उत्तर लिखो:–

क. बच्चों में कविता कौन लिख लेता था?

ख. नजानू बच्चों के साथ खेलने के लिए क्यों तैयार नहीं हुआ।

ग. नजानू ने सबसे पहले किसके बारे में कविता लिखी? उस कविता की लाइनें लिखो?

घ. जल्दबाज़ अपने बारे में लिखी कविता सुनकर नजानू को क्या कहता है।

तुम भी अपने दोस्तों के बारे में कविताएँ बनाओ।